Ques: सिंधुघाटी सभ्यता के आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालें।

Ans: सिंधुघाटी सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी। इसका अस्तित्व 3250 ईसापूर्व और 2750 ईसा पूर्व के बीच रहा

कृषि और पशुपालन ⇒ सैंधव निवासियों के जीवन का मुख्य उद्यम कृषि कर्म था। सिंधु तथा उसकी सहायक नदियाँ प्रतिवर्ष उर्वरा मिट्टी बहाकर लाती थी, जिनमें पैदावार काफी अच्छी होती थी। खुदाई में गेहूँ तथा जौ के दाने मिलते हैं। गुजरात क्षेत्र में लोथल तथा रंगपुर के स्थलों से मृत्पिण्ड से लिपटे हुए धान की भूसी मिली है। धान की खेती किए जाने का स्पष्ट प्रमाण हुलास से मिलता है। किंतु यह उत्तरकालीन है। लोथल तथा रंगपुर से बाजरा की खेती किए जाने के प्रमाण मिलते हैं। हड़प्पा में मटर तथा तिल की खेती होती थी। सर्वप्रथम यहीं के निवासियों ने कपास की खेती प्रारंभ किया था। फलों में केला, नारियल, खजूर, अनार, नींबू, तरबूज आदि का उत्पादन होता था। मिट्टी नरम होने के कारण पाषाण तथा कांस्य निर्मित उपकरणों की सहायता से खेती की जाती थी। मोहनजोदड़ो से मिट्टी के बने एक हल का प्रारूप तथा बनावली से मिट्टी के बने हल का पूरा प्रारूप प्राप्त हो चुका है। सिंचाई के लिए बांध तथा नहरें भी बनाई होगी। सैंधव नगरों की समृद्धि को देखते हुए यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि वहाँ के किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज उत्पन्न करते थे तथा अतिरिक्त उत्पादन को नगरों में भेजते थे। सिंधु सभ्यता का व्यापक नगरीकरण अत्यंत उपजाऊ भूमि की पृष्ठभूमि में ही संभव हो सका था। विभिन्न नगरों में रखने के लिए अन्नागार बने होते थे। इनमें संभवतः जनता से कर के रूप में वसूल किया गया अनाज रखा जाता था। अन्नागार हड़प्पा संस्कृति के महत्वपूर्ण

अंग थे। इसके रखरखाव रखरखाव के लिए राज्य की ओर से पदाधिकारी एवं कर्मचारी नियुक्त किए जाते थे। अन्नागारों के पास ही अनाज कूटने के चबूतरे तथा मजदूरों की बस्तियों के भी अवशेष मिले हैं। लोथल से एक वृत्ताकार चक्की के दो पाट भी मिलते हैं।

कृषि के साथ-साथ पशुपालन का भी विकास हुआ। सैंधव मृद्भाण्डों, मुहरों पर की गई चित्रकारियों तथा प्राप्त जीवाश्मों के आधार पर हम उनके पालतू-पशु-पक्षियों के विषय में अनुमान लगा सकते हैं। कूबड़दार वृषभ का अंकन मुहरों पर बहुतायत में मिलता है। अन्य पालतू पशुओं में बैल, गाय, भैंस, कुत्ते, सुअर भेड़, बकरी, हिरन खरगोश आदि थे। हाथी से उनका परिचय था, क्योंकि हाथी दाँत का प्रयोग कलात्मक वस्तुओं के निर्माण में किया गया है। कुछ पशुओं की धार्मिक मान्यता थी तथा कुछ को मांस के लिए पाला गया था। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगन, सुरकोटदा के स्थलों से एक कूबड़दार ऊँट का जीवाश्म मिला है। जहाँ तक घोड़े का प्रश्न है, प्रारंभ में ऐसा माना जाता था कि सैंधव लोग इससे परिचित नहीं थे और यह आर्यों का प्रिय पशु था। किंतु लोथल, सुरकोटडा, कालीबंगन आदि स्थलों से घोड़े की मृण्मूर्तियों, हड्डियों, जबड़े आदि के अवशेष मिल जाने के पश्चात अब यह निश्चित हो गया है कि इस पशु से भी सैंधव लोग परिचित थे। लोथल से प्राप्त घोड़े के दूसरे तथा चौथे ऊपरी चौघड़ के दांत तो बिल्कुल आधुनिक पालतू घोड़े के दांत जैसे हैं। बी. बी. लाल ने कालीबंगन के उत्खनन से घोड़े के अवशेष मिलने की सूचना दी है। नेसदी नामक नगर पशुपालकों का प्रमुख केंद्र था।

शिल्प तथा उद्योग धंधें — सैंधव निवासी शिल्पों एवं उद्योग धंधों मे भी रूचि लेते थे। खुदाई में प्राप्त कताई - बुनाई के उपकरणों (तकली, सुई) आदि से पता चलता है कि कपड़ा बुनना एक प्रमुख उद्योग था। माक्की ने चाँदी के एक कलश में कपड़े का टुकड़ा तथा मैके ने अनेक वस्तुओं मे लिपटे हुए धागे प्राप्त किए हैं। सिंधु प्रदेश में पटुए के अवशेष मिले हैं। मोहनजोदड़ो से जो पुरोहित की मूर्ति मिली हैं वह तिपतिया अलंकरण से युक्त हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि यहाँ के बुनकर वस्त्रों पर कढ़ाई करना जानते थे। चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना, खिलौने बनाना, मुद्राओं का निर्माण करना, आभूषण एवं गुरियों का निर्माण करना आदि कुछ अन्य प्रमुख उद्योग धंधे थे। धातुओं मे सोना, चांदी, तांबा, कांसा तथा सीसा का उन्हें ज्ञान था और इनसे विविध प्रकार के आभूषण एवं उपकरण बनाए जाते थे। तांबे तथा कांसे का प्रयोग मानव एवं पशु मूर्तियाँ बनाने में भी किया जाता था। धातुओं को गलाने, उन्हे पीटने तथा उनपर पानी चढ़ाने की विधि से लोग अच्छी तरह परिचित थे। शंख, सीप, घोंघा, हाथी-दांत से भी उपकरणों का निर्माण करना वे जानते थे। गाड़ी के पहियों तथा तख्तों के कई अवशेष मिलते हैं। सैंधव भवन पक्की ईटों के बने हैं। यहाँ के कुम्हार विशेष आकार-प्रकार के बर्तन बनाते थे। सैंधव सभ्यता के कुछ नगर विशिष्ट वस्तुओं के निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे। चन्हूदड़ों तथा लोथल में मनका बनाने का कार्य होता था। चन्हूदड़ो से सेलखड़ी मुहरें तथा चर्ट के बटखरे भी तैयार किए जाते थे। बालाकोट तथा लोथल का सीप उद्योग सुविकसित था। सैंधव निवासियों द्वारा पहने जाने वाले कंगन तथा अन्य आभूषण संभवतः यहीं तैयार किए जाते थे।

* व्यापार तथा वाणिज्य - सैंधव निवासियों ने व्यापार में भी रुचि ली तथा उनका आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही व्यापार समुन्नत था। वस्तुतः बड़े पैमाने पर व्यापार के बिना सैंधव नगरों का विकास संभव ही न था। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो व्यापार के भी प्रसिद्ध केंद्र थे। यहाँ के व्यापारी मुख्यतः जलीय मार्गों से ही व्यापार किया करते थे यद्यपि थलीय मार्ग भी अज्ञात नहीं थे। सैंधव नगरों में कच्चे माल तथा प्राकृतिक संपदाओं का अभाव था। अतः यहाँ के निवासी पास-पड़ोस के राज्यों तथा विदेशों से इसे प्राप्त करते थे। वे मैसूर से सोना, राजस्थान, बलूचिस्तान तथा मद्रास से तांबा, अजमेर से सीसा, कश्मीर एवं काठियावाड़ से बहुमूल्य पत्थर आदि मंगाते थे। इसके अतिरिक्त, अफगानिस्तान, सोवियत तुर्कमानिया, मेसोपोटामिया, ईरान आदि देशों से भी वे अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त करते थे मोहनजोदड़ो तथा लोथल से हाथी दांत के बने हुए तराजू के पलड़े मिलते हैं। उनके बाट मुख्यतः घनाकार (cubical) होते थे। कुछ बाट बेलनाकार, ढोलाकार, वर्तुलाकार आदि प्रकार के भी मिलते हैं। लोथल तथा मोहनजोदड़ो से क्रमशः हाथीदांत एवं सीप निर्मित एक-एक पैमाना भी मिलता है।

सैंधव निवासियों का भारतीय प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के अन्य कई देशों के साथ भी व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध था। उनके अधिकतर क्षेत्र में सुविस्तृत समुद्र तट था जिसका भरपूर उपयोग उन्होंने किया। इसके माध्यम से उन्हें बाह्य देशों के साथ संबंध स्थापित करने में सुगमता हुई। मध्य एशिया, फारस की खाड़ी के देशों, उत्तरी-पूर्वी अफगानिस्तान, ईरान, बहरीन द्वीप, मेसोपोटामिया, मिस्र, क्रीट आदि के साथ उन्होंने घनिष्ठ

व्यापारिक संबंध स्थापित कर रखे थे। उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान के शर्तुगई नामक स्थान से उत्खनन के परिणामस्वरूप एक पूर्ण विकसित सैंधव बस्ती के साक्ष्य प्रकाश में आए हैं। इसकी नगर योजना हड़प्पा जैसी है तथा मृद्भांड, मनके, मुहर आदि भी यहाँ से मिली हैं। इन सबसे स्पष्ट होता है कि सैंधव लोगों ने ही इस क्षेत्र को आबाद किया था। अफगानिस्तान, आर्मेनिया, तथा ईरान से चाँदी तथा लाजवर्द मणि का आयात किया जाता था। मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंधों के विषय में अपेक्षाकृत अधिक विवरण पुरातत्व तथा लेखों से मिलता है। मेसोपोटामिया के विभिन्न स्थलों - सुमेर, उर, तेल, अस्मर, किश, उम्मा, लगश, निप्पुर, असुर आदि से सैंधव कारीगरों अथवा उनके प्रभाव से निर्मित अनेक वस्तुएँ, जैसे- कार्नेलियन, सीप तथा हड्डियों के मनके, मुहरें आदि प्राप्त हुई जो सैंधव व्यापारियों द्वारा वहाँ पहुँचायी गयी होगी। लोथल से तांबा तथा हाथीदांत की वस्तुएँ मेसोपोटामिया नगरों को प्रचुर मात्रा में भेजी जाती थी। दूसरी ओर मेसोपोटामियन उत्पत्ति की विविध वस्तुयें खाँचेदार मनके, काँसे के पिन, सेलखड़ी के बटन आदि सैंधव नगरों से मिलती हैं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर तथा ठीकरे के ऊपर सुमेरियन नावों के चित्र अंकित हैं जो समुद्री व्यापार का सूचक हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों की पुष्टि अभिलेखीय विवरण से भी होती है। सैंधव लिपि के अपठित रहने के कारण हमें यहाँ के लेखों से तो इस संबंध में कोई सूचना नहीं देते, किंतु सारगोन युगीन सुमेरियन लेख इस संबंध में महत्वपूर्ण सूचना देती है। व्यापार के प्रसंग में 3 स्थानों मेलुहा, दिलमुन, तथा मगन का उल्लेख मिलता है। मोहनजोदड़ो, लोथल, सुरकोटडा आदि से हाथीदांत के अवशेष मिलते हैं। दिलमुन की पहचान बहरीन द्वीप " तथा मगन की पहचान बलूचिस्तान के मकरान तट से की गयी है।

ये दोनो ही स्थान सिंधु तथा मेसोपोटामिया के मध्य स्थित थे तथा व्यापार में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। डेनमार्क के पुरातत्ववेत्ताओं के निर्देशन में बहरीन द्वीप के "रस-अल-कला" एवं बर्बर नामक स्थलों की खुदाई करवायी गई। यहाँ से नगर योजना के साक्ष्य मिले तथा सैंधव उत्पति की विविध वस्तुएँ प्राप्त होती है। फारस की खाड़ी में स्थित फैलका से सेलखड़ी की वृत्ताकार मुहरें मिली हैं, जिनपर सैंधव लिपि में लेख है। इसी प्रकार ओमन द्वीप के विभिन्न स्थलों से भी सैंधव मूल की कलात्मक वस्तुएँ प्राप्त की गयी है।

मेसोपोटामिया तथा सिंधु प्रदेश के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध सारगोन युग (2400 ई० पू० – 1750) में ही था।

मेसोपोटामिया के अतिरिक्त मिस्र में हड़प्पा के प्रकार की गुरियाँ मिली है। मिस्र के साथ व्यापार प्रधानतः स्थल से होता था। यहाँ के उत्खननकर्ता राव को गोरिल्ला की एक मृण्मूर्ति तथा "ममी" की एक आकृति मिली है। सीरिया के "हमा" नामक स्थान से मुहर प्राप्त हुआ है जिसपर एक सींग वाले वृषभ का चित्रण। इसप्रकार सैंधव निवासियों का बाह्य व्यापार उनके आंतरिक व्यापार की अपेक्षा अधिक विकसित था, जिसकी पुष्टि के लिए यथेष्ट प्रमाण उपलब्ध होता। वास्तव में यदि देखा जाए तो सैंधव सभ्यता की समृद्धि का एक प्रमुख कारण उनका विदेशी व्यापार ही था।